The Eternal Epic of Divine Mother

दुर्गा सप्तशती

DURGA SAPTASHATI

Chapter 9: The Slaying of Nishumbha

अध्याय ९: निशुम्भ-वध

Sibling Fury Quelled
सहोदर के क्रोध का शमन

Demonic Emergence Halted
असुर की उत्पत्ति का नाश

Nishumbha's Final Breath
निशुम्भ की अंतिम श्वास

Matrikas' Decisive Strikes
मातृगण का अंतिम प्रहार

Victory of Cosmic Order
कॉस्मिक ऑर्डर की विजय

Durga Saptashati

|| 'नवम अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

सारांश (अध्याय ९: निशुम्भ-वध)

राजा के पूछने पर ऋषि मार्कण्डेय ने रक्तबीज के वध के बाद शुम्भ और निशुम्भ के क्रोध तथा उनके युद्ध का वर्णन किया। रक्तबीज और अन्य दैत्यों के मारे जाने से अत्यंत क्रुद्ध निशुम्भ ने असुरों की प्रधान सेना के साथ देवी पर आक्रमण किया। महापराक्रमी शुम्भ भी मातृगणों से युद्ध कर क्रोधवश चण्डिका को मारने के लिए आ पहुँचा।

देवी और दोनों दैत्यों के बीच घोर संग्राम हुआ, जिसमें वे भयंकर बाणों की वर्षा कर रहे थे। देवी ने उनके बाणों को काटकर उनके शरीर पर भी चोट पहुँचाई।

निशुम्भ ने देवी के वाहन सिंह के मस्तक पर तलवार और ढाल से प्रहार किया, जिसे देवी ने तुरंत ही बाणों से काट डाला। शक्ति, शूल और गदा से किए गए निशुम्भ के प्रहारों को भी देवी ने चक्र, मुक्के और त्रिशूल से नष्ट कर दिया। अंत में, देवी ने बाणों से घायल कर निशुम्भ को धरती पर सुला दिया।

भाई निशुम्भ के गिर जाने पर शुम्भ अत्यंत क्रोधित होकर युद्ध के लिए आगे बढ़ा। उसने रथ पर सवार होकर अपनी आठ भुजाओं से आकाश को ढक लिया। देवी ने शंख, धनुष की टंकार और अपने घण्टे के शब्द से, तथा सिंह की दहाड़ से संपूर्ण दिशाओं को गुँजा दिया। काली ने पृथ्वी पर आघात किया और शिवदूती ने अट्टहास किया, जिससे दैत्य थर्रा उठे।

शुम्भ और देवी के बीच भीषण बाण युद्ध हुआ। क्रोध में भरी चण्डिका ने शुम्भ को शूल से मारा, जिससे वह मूर्छित होकर गिर पड़ा।

इतने में ही निशुम्भ को चेतना आई और उसने फिर से बाणों तथा दस हज़ार बाँहें बनाकर चक्रों के प्रहार से देवी, काली और सिंह को घायल कर दिया। दुर्गम पीड़ा का नाश करने वाली देवी ने क्रोधित होकर अपने बाणों से उसके सभी अस्त्रों को काट गिराया।

इसके बाद निशुम्भ गदा और फिर शूल लेकर दौड़ा, पर देवी ने उसकी गदा को तलवार से काट दिया और अपने शूल से उसकी छाती को बेध डाला। शूल से विदीर्ण छाती से 'खड़ी रह' कहता हुआ एक और महाबली पुरुष निकला, जिसका मस्तक देवी ने खड्ग से काट दिया।

इस प्रकार निशुम्भ मारा गया। सिंह ने असुरों का भक्षण किया, और काली तथा शिवदूती ने भी अन्य दैत्यों को खाया। मातृगणों—कौमारी, ब्रह्माणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी और ऐन्द्री—के प्रहारों से भी अनेक दैत्य नष्ट हो गए, कुछ भाग गए और कुछ अन्य देवीगणों के ग्रास बन गए।

इस प्रकार, मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'निशुम्भ-वध' नामक नवाँ अध्याय पूरा हुआ।

Durga Saptashati
|| 'नवम अध्याय' ||

Chapter 9 :

निशुम्भ-वध

॥ ध्यान ॥

मैं अर्धनारीश्वर के श्रीविग्रह की निरन्तर शरण लेता (लेती) हूँ। उसका वर्ण बन्धूकपुष्प और सुवर्ण के समान रक्तपीतमिश्रित है। वह अपनी भुजाओं में सुन्दर अक्षमाला, पाश, अङ्कुश और वरद-मुद्रा धारण करता है; अर्धचन्द्र उसका आभूषण है तथा वह तीन नेत्रों से सुशोभित है।

राजाने कहा -॥ भगवन्! आपने रक्तबीज के वधसे सम्बन्ध रखनेवाला देवी चरित्रका यह अद्भुत माहात्म्य मुझे बतलाया॥

अब रक्तबीजके मारे जानेपर अत्यन्त क्रोधमें भरे हुए शुम्भ और निशुम्भ ने जो कर्म किया, उसे मैं सुनना चाहता हूँ॥

ऋषि कहते हैं -॥ राजन्! युद्ध में रक्तबीज तथा अन्य दैत्यों के मारे जाने पर शुम्भ और निशुम्भ के क्रोध की सीमा न रही॥

अपनी विशाल सेना इस प्रकार मारी जाती देख निशुम्भ अमर्षमें भरकर देवीकी ओर दौड़ा। उसके साथ असुरों की प्रधान सेना थी॥

उसके आगे पीछे तथा पार्श्वभाग में बड़े-बड़े असुर थे, जो क्रोध से ओठ चबाते हुए देवी को मार डालने के लिये आये॥

महापराक्रमी शुम्भ भी अपनी सेना के साथ मातृगणों से युद्ध करके क्रोधवश चण्डिका को मारने के लिये आ पहुँचा॥

तब देवी के साथ शुम्भ और निशुम्भ का घोर संग्राम छिड़ गया। वे दोनों दैत्य मेघोंकी भाँति बाणोंकी भयंकर वृष्टि कर रहे थे॥

उन दोनों के चलाये हुए बाणों को चण्डिकाने अपने बाणों के समूह से तुरंत काट डाला और शस्त्र समूहों की वर्षा करके उन दोनों दैत्य पतियों के अङ्गोंमें भी चोट पहुँचायी॥

निशुम्भ ने तीखी तलवार और चमकती हुई ढाल लेकर देवी के श्रेष्ठ वाहन सिंह के मस्तक पर प्रहार किया।

अपने वाहन को चोट पहुँचने पर देवी ने क्षुरप्र नामक बाण से निशुम्भ की श्रेष्ठ तलवार तुरंत ही काट डाली और उसकी ढाल को भी, जिसमें आठ चाँद जड़े थे, खण्ड-खण्ड कर दिया।

ढाल और तलवार के कट जाने पर उस असुर ने शक्ति चलायी, किंतु सामने आने पर देवी ने चक्र से उसके भी दो टुकड़े कर दिये।

अब तो निशुम्भ क्रोध से जल उठा और उस दानव ने देवी को मारने के लिये शूल उठाया; किंतु देवी ने समीप आने पर उसे भी मुक्के से मार कर चूर्ण कर दिया।

तब उसने गदा घुमाकर चण्डी के ऊपर चलायी, परंतु वह भी देवी के त्रिशूल से कट कर भस्म हो गयी।

तदनन्तर दैत्यराज निशुम्भ को फरसा हाथ में लेकर आते देख देवी ने बाण समूहों से घायल कर धरती पर सुला दिया।

उस भयंकर पराक्रमी भाई निशुम्भ के धराशायी हो जाने पर शुम्भ को बड़ा क्रोध हुआ और अम्बिका का वध करने के लिये वह आगे बढ़ा।

रथ पर बैठे-बैठे ही उत्तम आयुधों से सुशोभित अपनी बड़ी-बड़ी आठ अनुपम भुजाओं से समूचे आकाश को ढक कर वह अद्भुत शोभा पाने लगा।

उसे आते देख देवी ने शङ्ख बजाया और धनुष की प्रत्यञ्चा का भी अत्यन्त दुस्सह शब्द किया। साथ ही अपने घण्टे के शब्द से, जो समस्त दैत्य-सैनिकों का तेज नष्ट करने वाला था, सम्पूर्ण दिशाओं को व्याप्त कर दिया।

तदनन्तर सिंह ने भी अपनी दहाड़ से, जिसे सुनकर बड़े-बड़े गजराजों का महान् मद दूर हो जाता था, आकाश, पृथ्वी और दसों दिशाओं को गुँजा दिया।

फिर काली ने आकाश में उछलकर अपने दोनों हाथों से पृथ्वी पर आघात किया। उससे ऐसा भयंकर शब्द हुआ, जिससे पहले के सभी शब्द शान्त हो गये।

तत्पश्चात् शिवदूती ने दैत्यों के लिये अमङ्गलजनक अट्टहास किया। इन शब्दों को सुनकर समस्त असुर थर्रा उठे; किंतु शुम्भ को बड़ा क्रोध हुआ।

उस समय देवी ने जब शुम्भ को लक्ष्य करके कहा - 'ओ दुरात्मन्! खड़ा रह, खड़ा रह', तभी आकाश में खड़े हुए देवता बोल उठे - 'जय हो, जय हो।'

शुम्भ ने वहाँ आकर ज्वालाओं से युक्त अत्यन्त भयानक शक्ति चलायी। अग्निमय पर्वत के समान आती हुई उस शक्ति को देवी ने बड़े भारी लूके से दूर हटा दिया।

उस समय शुम्भ के सिंहनाद से तीनों लोक गूँज उठे। राजन्! उसकी प्रतिध्वनि से वज्रपात के समान भयानक शब्द हुआ, जिसने अन्य सब शब्दों को जीत लिया।

शुम्भ के चलाये हुए बाणों के देवी ने और देवी के चलाये हुए बाणों के शुम्भ ने अपने भयंकर बाणों द्वारा सैकड़ों और हजारों टुकड़े कर दिये।

तब क्रोध में भरी हुई चण्डिका ने शुम्भ को शूल से मारा। उसके आघात से मूर्च्छित हो वह पृथ्वी पर गिर पड़ा।

इतने में ही निशुम्भ को चेतना हुई और उसने धनुष हाथ में लेकर बाणों द्वारा देवी, काली तथा सिंह को घायल कर डाला।

फिर उस दैत्यराज ने दस हजार बाँहें बनाकर चक्रों के प्रहार से चण्डिका को आच्छादित कर दिया।

तब दुर्गम पीड़ा का नाश करने वाली भगवती दुर्गा ने कुपित होकर अपने बाणों से उन चक्रों तथा बाणों को काट गिराया।

यह देख निशुम्भ दैत्य सेना के साथ चण्डिका का वध करने के लिये हाथ में गदा ले बड़े वेग से दौड़ा।

उसके आते ही चण्डी ने तीखी धार वाली तलवार से उसकी गदा को शीघ्र ही काट डाला। तब उसने शूल हाथ में ले लिया।

देवताओं को पीड़ा देने वाले निशुम्भ को शूल हाथ में लिये आते देख चण्डिका ने वेग से चलाये हुए अपने शूल से उसकी छाती छेद डाली।

शूल से विदीर्ण हो जाने पर उसकी छाती से एक दूसरा महाबली एवं महापराक्रमी पुरुष

'खड़ी रह, खड़ी रह' कहता हुआ निकला।

उस निकलते हुए पुरुष की बात सुनकर देवी ठठाकर हँस पड़ीं और खड्ग से उन्होंने उसका मस्तक काट डाला। फिर तो वह पृथ्वी पर गिर पड़ा।

तदनन्तर सिंह अपनी दाढ़ों से असुरों की गर्दन कुचलकर खाने लगा, यह बड़ा भयंकर दृश्य था। उधर काली तथा शिवदूती ने भी अन्यान्य दैत्यों का भक्षण आरम्भ किया।

कौमारी की शक्ति से विदीर्ण होकर कितने ही महादैत्य नष्ट हो गये। ब्रह्माणी के मन्त्रपूत जल से निस्तेज होकर कितने ही भाग खड़े हुए।

कितने ही दैत्य माहेश्वरी के त्रिशूल से छिन्न-भिन्न हो धराशायी हो गये। वाराही के थूथुन के आघात से कितनों का पृथ्वी पर कचूमर निकल गया।

वैष्णवी ने भी अपने चक्र से दानवों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। ऐन्द्री के हाथ से छूटे हुए वज्र से भी कितने ही प्राणों से हाथ धो बैठे।

कुछ असुर नष्ट हो गये, कुछ उस महायुद्ध से भाग गये तथा कितने ही काली, शिवदूती तथा सिंह के ग्रास बन गये।

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत

देवी माहात्म्य में 'निशुम्भ-वध' नामक नवाँ अध्याय पूरा हुआ ॥

॥Durga Saptashati

|| 'Ninth Chapter' ||

Chapter 9 :

The Slaying of Nishumbha

॥ **Dhyana (Meditation)** ॥

I constantly take refuge in the divine form of Ardhanarishvara. His complexion is a reddish-yellow mixture, like the Bandhuka flower and gold. He holds a beautiful rosary (akshamala), a noose (pasha), an elephant goad (ankusha), and the boon-bestowing gesture (varada mudra) in his arms; the crescent moon is his ornament, and he is adorned with three eyes.

The King said -॥ Bhagavan! You have recounted to me this wondrous greatness of the Devi's exploits, which is related to the slaying of Raktabija.

Now, after Raktabija was killed, I wish to hear what action Shumbha and Nishumbha, filled with extreme rage, performed.

The Rishi said -॥ Rajan! With Raktabija and the other demons slain in battle, the wrath of Shumbha and Nishumbha knew no bounds.

Seeing his vast army being destroyed in this manner, Nishumbha, filled with fury, rushed towards the Devi. He was accompanied by the main army of the Asuras.

In front, behind, and on both sides of him were mighty Asuras, who came biting their lips in anger, intent on killing the Devi.

The mighty warrior Shumbha, too, having fought with the Matriganas (Mother Goddesses) along with his army, arrived in a rage to kill Chandika.

Then, a fierce battle commenced between the Devi and Shumbha and Nishumbha. Those two demons were showering a terrible rain of arrows, like clouds.

Chandika immediately cut down the arrows launched by both of them with her own multitude of arrows, and also wounded the limbs of those two lords of the demons by showering groups of weapons.

Nishumbha took a sharp sword and a shining shield and struck the head of the Devi's excellent vehicle, the lion.

When her vehicle was wounded, the Devi immediately cut off Nishumbha's excellent sword with an arrow named Kṣurapra (razor-edged), and also broke his shield, which was studded with eight moons, into pieces.

With his shield and sword cut, that Asura hurled a shakti (spear/javelin), but the Devi cut it into two pieces with her discus as it approached.

Now Nishumbha was burning with rage, and that Danava raised a shoola (trident) to strike the Devi; but the Devi crushed it with her fist as it came near.

Then he swung a gada (mace) and hurled it at Chandi, but that too was cut and reduced to ashes by the Devi's trident.

Thereafter, seeing Nishumbha, the king of the Daityas, advancing with an axe in hand, the Devi wounded him with groups of arrows and laid him down on the earth.

When his terribly powerful brother Nishumbha fell to the ground, Shumbha became extremely angry and advanced to kill Ambika.

Seated on his chariot, with his eight unparalleled great arms adorned with excellent weapons, covering the entire sky, he appeared in a wondrous glory.

Seeing him approach, the Devi blew her conch and also made an exceedingly unbearable sound from the string of her bow. At the

same time, she filled all directions with the sound of her bell, which was capable of destroying the energy of all the demon soldiers.

Thereafter, the lion also roared, a sound that dispelled the great pride of even mighty elephants, and echoed through the sky, the earth, and the ten directions.

Then Kali leapt into the sky and struck the earth with both her hands. The dreadful sound produced by this quieted all the previous sounds.

Subsequently, Shivaduti let out a terrifying, inauspicious burst of laughter for the demons. Hearing these sounds, all the Asuras trembled; but Shumbha was greatly enraged.

At that moment, when the Devi aimed at Shumbha and said, 'O wicked soul! Stop, stop,' the gods standing in the sky exclaimed, 'Victory! Victory!'

Shumbha came there and hurled an exceedingly terrifying shakti (spear) endowed with flames. The Devi pushed away that shakti, which was coming like a mountain of fire, with a very large burning torch (luka).

At that time, the three worlds resounded with Shumbha's lion-roar. Rajan! The echo of it produced a sound as terrifying as a thunderbolt, which surpassed all other sounds.

The Devi cut into hundreds and thousands of pieces the arrows shot by Shumbha, and Shumbha similarly cut the arrows shot by the Devi with his terrifying arrows.

Then, Chandika, filled with rage, struck Shumbha with her shoola (trident). Stunned by the impact, he fell to the ground.

In the meantime, Nishumbha regained consciousness, took his bow, and wounded the Devi, Kali, and the lion with arrows.

Then that king of the Daityas created ten thousand arms and covered Chandika with the attack of his chakras (discus).

Then the Bhagavati Durga, who destroys difficult affliction, became angry and cut down those chakras and arrows with her own arrows.

Seeing this, the demon Nishumbha, accompanied by his army, rushed forward with great speed, holding a mace, to kill Chandika.

As he approached, Chandi swiftly cut down his mace with her sharp-edged sword. Then he took a shoola (trident) in his hand.

Seeing Nishumbha, the tormentor of the gods, approaching with a shoola in hand, Chandika pierced his chest with her own shoola, which was hurled with great force.

As his chest was torn open by the shoola, another exceedingly mighty and powerful man emerged from his body, saying, 'Stop, stop.'

Hearing the words of that emerging man, the Devi burst into laughter and cut off his head with her sword. Then he too fell to the ground.

Thereafter, the lion began to crush the necks of the Asuras with its fangs and devour them; this was a very terrifying sight. On the other side, Kali and Shivaduti also began to consume the other demons.

Several great Daityas were destroyed, torn apart by the Shakti (power) of Kaumari. Several fled, becoming powerless by the water consecrated with Mantras by Brahmani.

Several demons, cut into pieces by the Trishoola (trident) of Maheshwari, lay fallen on the earth. Several had their bodies crushed on the ground by the impact of Varahi's snout.

Vaishnavi also tore the Danavas into pieces with her discus. Many lost their lives due to the thunderbolt released from Aindri's hand.

Some Asuras were destroyed, some fled from that great battle, and many became the prey of Kali, Shivaduti, and the lion.

Thus, in the Shrimarkandeya Purana, in the narrative of the

Savarnika Manvantara,

The ninth chapter titled 'The Slaying of Nishumbha' in the Devi Mahatmya is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator
- Numerology Kundali Matching Tool